गर्दभाय सादर नमः

लेखक – अनिल चावला

कुछ दिन पूर्व समाचार पढ़ा कि गधा विलुप्त हो रहा है। मन में बहुत गहरी पीड़ा हुई। इस लुप्त होते प्राणी से वार्तालाप करने का निश्चय किया और घर से निकल पड़ा। बहुत ढूँढने के बाद एक गाँव में सफलता प्राप्त हुई। मैंने तत्काल लंबकर्ण पशुश्रेष्ठ को प्रणाम किया और कहा कि हे वैशाख नंदन, हे रासभ, हे उपक्रोष्टा, मैं आपकी प्रजाति के लुप्त होने का समाचार पढ़ कर विचलित हो उठा हूँ। आप जैसे स्वामीभक्त, परिश्रमी, भारवाहक सेवक की हम मनुष्यों ने अनादर एवं अवहेलना की है। मुझे इसका दुःख है। मैं समस्त मानव जाति की ओर से आप से क्षमायाचना करने को प्रस्तुत हुआ हूँ।

याचना सुनकर गर्दभराज ने मेरी ओर आश्चर्य एवं हिकारत मिश्रित दृष्टि से देखा और फिर कुछ इस प्रकार कहा – हे मूढ़ मनुष्य, तेरी आँखों पर अज्ञान का परदा छाया हुआ है। तेरा अज्ञान ही तेरे दुःख एवं पीड़ा का कारण है। यह सत्य है कि पशुरूप में गधे विलुप्त हो रहे हैं। पर उससे भी बड़ा सत्य यह है कि गधों की आत्माएँ मानव शरीर धारण कर भारतवर्ष में उच्च पदों को प्राप्त कर रही हैं। जिस प्रकार गरीब मनुष्य धन प्राप्त होने पर वस्त्र बदल लेता है, उसी प्रकार अनेक गधों ने अपने पुण्यों का प्रतिफल प्राप्त कर मनुष्य योनि में प्रवेश किया है। हे अज्ञानी मनुष्य, तुम नगर में जाकर कुछ प्रभावी व्यक्तियों से मिलो, तुम्हें मेरे कथन की सत्यता पर विश्वास अवश्य होगा।

मैं अचंभित था। मन में श्रद्धा का सागर उमड़ने लगा। चरण स्पर्श करने को मन करने लगा। पर दूसरे ही क्षण इसमें निहित खतरे की ओर ध्यान गया। मैंने दूर से ही सादर नमन किया और उल्टे पाँव लौट आया।

मार्ग में एक प्रमुख राजनैतिक दल का कार्यालय था। ज्ञानी गर्दभराज की सलाह मान कर मैं वहाँ चला गया। एक वरिष्ठ नेता बैठे थे। कुछ खीझे हुए थे। अपने एक सहयोगी को कह रहे थे – 'अगली बार वो यहाँ आए तो बाहर से ही भगा देना। नालायक ने नाक कटवा दी। अध्यक्ष जी से मिलवाने ले गया था उसे। पाँच लोगों ने उनके पाँव छूए। पर इन महाराज से तो कमर भी टेढ़ी नहीं हुई। पता नहीं क्या समझता है खुद को। पार्टी में ऐसे नकचढों के लिए कोई जगह नहीं है।'

© All Rights Free

मुझे अचानक सम्मुख देख नेताजी की मुद्रा परिवर्तित हो गयी। चेहरे पर मुस्कान छा गयी। बोले, कहिए, कैसे आना हुआ। मैंने कहा, बस यूँ ही गुजर रहा था, सोचा दर्शन कर लूँ। वे अभिभूत हो गये, खीज काफूर हो गयी। उनका मूड देखकर मैंने पूछा कि एक राजनैतिक दल के लिए अच्छा कार्यकर्ता कैसा होता है? वे बोले, 'अच्छा कार्यकर्ता वह होता है जिसका सिर सदा कंधे से नीचे रहे। बैल, घोड़े, भैंस, यहाँ तक कि बकरी के सामने भी चारा डालो तो वह सिर झुका कर चारा खाने लगेगा। जैसे ही चारा समाप्त हुआ, सिर ऊपर। ऐसे लोग हमारे लिए कतई उपयुक्त नहीं हैं। हमें तो ऐसा कार्यकर्ता चाहिए, जिसके सामने चारा हो या ना हो, सिर ऊपर न उठे। गधे की तरह चौबीस घंटे मेहनत करने को तैयार हो। रूखा–सूखा जो मिले उसमें प्रसन्न रहे और हमारी चुपड़ी रोटी या बिरयानी पर नजर न रखे। धूल में लोट लगाने में भी जिसे फाइव स्टार होटल के गद्दों का आनंद आए।'

इतना कह कर नेता जी ने मुझे ऐसी दृष्टि से देखा, जिसका अर्थ था, अब चलते बनो। मैंने फिर भी हिम्मत कर उन से पूछा कि यह तो आपने कार्यकर्ता के बारे में बताया; उत्तम कोटि के नेताओं के क्या गुण होते हैं? वे हँस कर बोले, 'अरे यह तो आप लोगों के मन का भ्रम है। अगर सौ गधे मिलकर एक गधे के पक्ष में ढेंचू–ढेंचू करने लगें तो वह एक गधा नेता बन जाता है। फिर एक दिन, जब हाईकमान के निर्देश पर किसी अन्य गधे के पक्ष में गर्दभराग अलापा जाने लगता है तो पहले वाला गधा अपनी समस्त औकात खो कर शून्य हो जाता है। राजनीति के पुराने खिलाड़ी इस सत्य को समझते हैं इसलिए कभी नेता होने का दंभ नहीं पालते। क्या पता कब लाल बत्ती वाली गाड़ी छोड़ कर सड़क किनारे की घास पर संतोष करना पड़े।'

इतना कहने के पश्चात नेताजी को लगा कि वे कुछ अधिक बोल गये हैं। मैंने भी वहाँ से खिसकने में भलाई समझी। कुछ दूर चलने पर एक सेवानिवृत्त अधिकारी मिल गये। जब तक वे पद पर थे, मैं उनके पास जाने से डरता था। पद से हटते ही उनके मन में प्रेम एवं आत्मीयता का सागर प्रकट हो गया था जो नित्य नये शिकार ढूँढता था। किसी और को बोलने का मौका देना उनकी परंपरा एवं शान के विरुद्ध है, पर वे शिकार को एक प्रश्न पूछने की अनुमति देते हैं। अपने प्रथम एवं अन्तिम प्रश्न में मैंने उनसे आई० ए० एस० अधिकारियों की चयन प्रक्रिया के बारे में पूछा।

उनकी लंबी वार्ता का सार कुछ इस प्रकार है। चयन प्रक्रिया में पहले चरण में दो परीक्षाएँ उत्तीर्ण करनी होती हैं। परीक्षार्थी को निरर्थक, अनुपयोगी, बेकार जानकारियों की एक विशालकाय गठरी को ढो कर परीक्षाकेन्द्र में ले जाना होता है। जो जितनी बड़ी गठरी ले जाता है, वह उतना सफल होता है। इसके बाद साक्षात्कार होता है जिसमें सर्वप्रथम यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रत्याशी के न तो सींग हों और न ही सींग निकलने की कोई संभावना हो। फिर यह देखा जाता है कि वह सरकार की गति के अनुसार चल सकेगा कि नहीं। तेज दौड़ने वाले घोड़े सरकार में दशकों से स्थापित व्यवस्थाओं का संतुलन बिगाड़ सकते हैं। सींग, गति, भारवाहन क्षमता इत्यादि के मापदण्डों पर खरे उतरने वाला सौभाग्यशाली ही आई० ए० एस० के रूप में अवतरित होकर अगले एवं पिछले दोनों पैरों से हर दिशा में दुलत्ती झाड़ने का सुख पाता है। पर यदि आप उस का कान पकड़ लें या पीठ पर सवार हो जाएँ तो बिना चूँ किये सीधा खड़ा हो जाता है।

मेरे चक्षु खुल चुके थे। गधे विलुप्त होने का समाचार पढ़ कर मुझे जो पीड़ा हुई थी, उसके स्थान पर अब ज्ञान का आलोक था। गर्दभ आत्माओं द्वारा मानव शरीर रूपी वस्त्र धारण करने की यह कथा मैंने आपको सुनाई क्योंकि यही कलियुग की गीता है। यदि आपके अंतःकरण में भी कोई गर्दभ आत्मा सुसुप्तावस्था में पड़ी है तो उसे जाग्रत कर जीवन के समस्त सुखों का भोग करें। साथ ही शीघ्र एवं उत्तम परिणाम हेतु प्रतिदिन सुबह–शाम जाप करें – गर्दभाय सादर नमः।

अनिल चावला

१७ फरवरी, २००४

चमचमाती साड़ियों की राजनीति

भला हो चित्रकार रवि वर्मा का। स्वर्ग से उनकी आत्मा जब कभी भारतभूमि को देखती होगी तो निश्चय ही अत्यन्त सन्तुष्टि का भाव उभरता होगा। कहा जाता है कि उनके चित्रों की बदौलत जमीन पर झाड़ू लगाती उल्टे पल्ले की साड़ी भारतीय नारी की राष्ट्रीय पोशाक बन गयी। साड़ी के स्थान को पिछले कुछ दशकों में सलवार सूट ने चुनौती देने का प्रयास किया है। कामकाजी महिलाएँ अब साड़ी के स्थान पर सलवार कमीज को पसंद करने लगी हैं।

परन्तु राजनीति में काम करने वाली महिलाओं के लिए साड़ी ही एकमात्र परिधान है। शायद राजनैतिक महिलाएँ कामकाजी की श्रेणी में नहीं आती हों। वैसे राजनैतिक व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं। एक वे जो सत्ता की रेवड़ी प्राप्त करने के लिए प्रयासरत होते हैं और दूसरे जो सत्ता का आनन्द भोग रहे होते हैं। राजनैतिक महिलाएँ भी इन्हीं दो श्रेणियों में विभक्त की जा सकती हैं।

सत्ता का सुख भोगती महिलाओं को वे सब सुख सहज भाव से प्राप्त हो जाते हैं जिनके लिए कामकाजी महिलाएँ आजीवन संघर्ष करती रहती हैं। बस की लाइन की कशमकश, बस पर चढ़ते हुए धक्कामुक्की, आवारा लड़कों की फिकरेबाजी, खटारा बसों में अनायास निकलकर चुभने वाले कीलों से मुक्ति पा चुकी महिला को कामकाजी कहना निश्चय ही अन्याय है। सांसारिक जीवन में लिप्त रहते हुए इस प्रकार के मोक्ष को प्राप्त करने वाली आत्मा हर रूप में पूजनीय होती है। ऐसे मे सुविधा के साधारण गणित गौण हो जाते हैं। आत्मा देवत्व की प्राप्ति हेतु लालायित होने लगती है। रवि वर्मा के सुन्दर चित्रों से झाँकती राजसिक देवियाँ आदर्श बन जाती हैं और दफ्तर में कम्पयूटर या टाइपराइटर पर उँगलियाँ घिसती महिला हेय बन जाती है। ऐसी स्थिति में सत्तासुख के सागर में गोते लगाती कौन महिला सलवार सूट पहन कर कल्पना के देवलोक से निष्कासित होना चाहेगी।

सत्ता के देवलोक से निष्कासन की पीड़ा अत्यन्त कष्टदायक होती है। प्रत्येक राजनीतिज्ञ यह बहुत भली–भाँति समझता है क्योंकि उसका आधा जीवन इस देवलोक के द्वार पर दस्तक देते गुजरता है। दस्तक शब्द उसकी मानसिक स्थिति का समुचित वर्णन करने में असमर्थ है। उसकी मनःस्थिति तो याचक की होती है। आत्मसम्मान, स्वाभिमान जैसे शब्दों को पूरी तरह अपने मानसिक शब्दकोष से निकालने के बाद ही कोई व्यक्ति सही तरीके से याचक बन सकता है। पर याचक एवं दाता का संबंध भी बड़ा विचित्र होता है। लोग चौराहे पर खड़ी मैली–कुचली बुढ़िया को दुत्कार देते हैं पर पाँच सितारा होटल में वेटर को पचास रुपये की टिप देने में संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि दाता की संतुष्टि का सीधा संबंध याचक के स्तर से होता है।

राजनैतिक दाता इस नियम के अपवाद नहीं होते। वे झोली का स्तर देखकर ही दान का टुकड़ा डालते हैं। साधारण सूती झोली में झूठे आश्वासन के दो शब्द डालने में भी कष्ट होता है। पर यदि झोली रेशम की नयी चमचमाती साड़ी की है, तो उसमें चवन्नी डालना दाता को स्वयं का अपमान महसूस होता है। ऐसी चमचमाती झोली में तो चुनाव का टिकट, पद, सम्मान इत्यादि डाले जाते हैं।

राजनैतिक महिलाएँ इस मूलभूत सत्य को बहुत अच्छी तरह समझती हैं। इसलिए जब वे याचक का जीवन जी रही होती हैं तो भी वे नित्य नयी चमचमाती रेशम की साड़ी पहनने का प्रयास करती हैं। इससे दो लाभ होते हैं। एक तो दाता की कृपादष्टि पड़ने की संभावना बढ़ जाती है और दूसरा वे कम से कम बाहरी रूप से सम्माननीय छवि बनाए रखती हैं। अपने आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान को पूर्णतः तिरोहित करने के बाद इन बाहरी लटकों–झटकों का बहुत महत्त्व होता है। आंतरिक खोखलेपन को छिपाने के लिए चमचमाता आवरण उपयोगी होता है। यह ऐसा विरोधाभास है जिसे राजनीति के बाहर खड़े लोग साधारणतः नहीं समझ पाते। पर यह ऐसा कटु सत्य है जिसे हर राजनीतिज्ञ बखूबी समझता है।

चमचमाता सुनहरा पर खोखला पात्र राजनीति में जितना सफल होता है, उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। इसीलिए प्रत्येक सफल राजनीतिज्ञ सफलता के समस्त सोपान चढ़ने के बावजूद एक ओर तो बाहरी चमचमाहट कायम रखना चाहता है तथा दूसरी ओर अंदर से खोखला बना रहना चाहता है।

चमचमाहट कायम रखने की दौड़ में स्त्री–पुरुष दोनों राजनीतिज्ञ समान रूप से जुटे रहते हैं। पर बेचारे पुरुषों के सिर पर तो गाँधीयुग की खादी का भूत सवार रहता है। भारतीय महिला राजनीतिज्ञों ने गाँधी के भूत को तिलांजलि दे दी है। आज उनका आदर्श कस्तूरबा नहीं, रवि वर्मा के चित्रों से झाँकती राजसिक महिलाएँ हैं। सच ही कहा है कि भला हो रवि वर्मा का।

अनिल चावला

१६ फरवरी, २००२

फाल्गुनी रंग में नेता बनने का इरादा

लेखक – अनिल चावला

फाल्गुन की नशीली हवाएँ, होली की मस्ती और भाँग का नशा – ये तीनों जब एक साथ आदमी पर असर करती हैं तो पुराने ब्रह्मचारी भी गाने लगते हैं, अपना तो इस साल शादी का इरादा है। बीस साल पहले ऐसे ही मौसम में जो गाना गाया था उसका नतीजा यह निकला कि फाल्गुन में होठों पर यह गाना आता है और आने के पहले ही दब जाता है। पर इस बार न जाने कैसी हवा चली और न जाने भाँग में कैसा नशा था कि होठों से एक नया गीत फूट पड़ा – अपना तो इस साल नेता बनने का इरादा है। भाँग की पिनक में भी हमें एकदम समझ आ गया कि आइडिया बुरा नहीं है। बस फिर क्या था एक गोली और गले के नीचे की, बम–बम–भोले का नारा लगाया और दिमाग के एक्सीलेरटर को पूरे फोरस से दबा दिया।

गाँव में कहावत है कि बाप न मारी मेंढकी, बेटा तीरअंदाज। मेरी सात पुश्तों में न कोई नेता हुआ और न कोई चम्मच। शादी तो बाप ने भी करी थी, दादा ने भी और परदादा ने भी। इसलिए जब शादी करने का दिमागी बुखार चढ़ा था तो अपने बाप की शरण में पहुँच गया था और उन्होंने आनन–फानन में मुझे घोड़ी पर चढ़ा दिया था। पर इस नये दिमागी रोग का इलाज बाप–दादा के पास तो मिलने से रहा। कहा जाता है कि जरूरत पड़ने पर गधे को भी बाप बना लेना चाहिए। कहने का मतलब यह कि मुझे समझ आ गया कि मुझे किसी ना किसी बड़े नेता को बाप बनाना होगा।

दो बच्चों का बाप बनने के बाद जब कोई अपने लिए बाप ढूँढने निकलता है तो वह बहुत सोच–समझ कर हर तरह की दिमागी कसरत करने के बाद ही किसी को बाप बनाने को तैयार होता है। अतः शहर के सभी वरिष्ठ नेताओं का आगा–पीछा देखा गया। मुझे बेटा बनना था इसलिए वरिष्ठ नेताओं के बेटों की वर्तमान स्थिति पर गौर करना आवश्यक था। एक नेता का बेटा नौकरी करता मिला। दूसरे का बेटा स्कूटर पर घूमता दिख गया। एक अन्य का बेटा विट्ठन मार्केट में सब्जी खरीदता मिल गया। लानत है ऐसे नेताओं पर और उनके बेटों पर। ऐसी नेतागिरी से तो पान की दुकान चलाना अच्छा। अनेक ऐसे झूठे नेताओं को नकारने के बाद मेरी दृष्टि उस महान विभूति पर जाकर अटक गयी। उन्होंने जीवन भर आदर्शों की दुहाई देते हुए पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता के रूप में काम किया। न दिन देखा, न रात देखा, बस पार्टी का काम ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य रखा। कभी पार्टी से कुछ लिया नहीं, बस दिया ही दिया। साढ़े तीन दशक पहले जब गाँव से आये थे तो एक अटैची भी नसीब नहीं थी। आज प्रभु की कपा से एक बेटा फैक्ट्री चलाता है, दो पोल्ट्री फार्म हैं, आठ–दस टैक्सियाँ चलती हैं, थोड़े से ट्रक हैं, बसें भी चलती हैं पर वो नौकर के नाम पर हैं। जीवन में उन्होंने पार्टी की निस्वार्थ सेवा के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। सेवा का जो मेवा प्रभु ने अपनी माया से दिया उसी में संतोष कर लिया। इस महान विभूति का चित्र दिमाग के स्क्रीन पर आते ही बाकी सब चित्र धुंधले हो गये। अपने राजनैतिक बाप की तलाश को पूर्ण जान, भोलेनाथ को धन्यवाद दिया, भाँग की एक गोली गटकी, दो–चार होने वाले बाप के लिए अंटी में रखी और चल पड़ा अपने लक्ष्य की ओर।

दो बार बाईपास कराने के बावजूद उनके कृष्ण मुख पर एक दिव्य तेज सुशोभित हो रहा था। सफेद कुर्ते पर गुलाल चमक रहा था। चमचों का दरबार जमा हुआ था। बादाम की गाढ़ी ठंडाई परोसी जा रही थी। इस ठंडाई के सामने मेरी अंटी में रखी गोलियों की उतनी ही औकात थी जितनी उन जैसे महापुरुष के सामने मुझ गरीब की। पर मैंने हिम्मत कर अपनी अंटी की गोलियाँ उनकी झोली में डाली और उनके काले पाँवों पर अपना सिर रख कर दण्डवत हो गया। अब भाँग ने कुछ ऐसा असर दिखाया कि मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। पथ्वीराज कपूर से लेकर रितिक रोशन तक किसी ने भी फिल्म में भी ऐसा प्रणय निवेदन नहीं किया होगा जैसा निवेदन मैंने उनके श्याम चरणों में किया। अपने बयालीस वर्ष के जीवन को निस्सार, निरर्थक बताते हुए मैंने उनकी महानता का गुणगान किया और प्रार्थना की कि मुझ नाचीज़ को अपना शिष्य बनाएँ अन्यथा मैं उनके चरणों को पकड़कर प्राण त्याग दूँगा। उस देवपुरुष ने मुझे उठाया, आँसू पोंछे और एक गिलास ठंडाई पीने को दी।

थोड़ी देर बाद उन्होंने सब चमचों को चलता किया तथा मुझे अंदर ले गये। अंतःकक्ष में पहुँच उन्होंने मुझसे पूछा कि मुझमें नेता बनने के कौन से गुण हैं। मैंने छाती फुलायी और कहा कि मैं पढ़ा–लिखा हूँ, लेखक हूँ और अच्छा वक्ता भी हूँ। सुनकर वे जोर–जोर से हँसने लगे और बोले – पढ़े–लिखे तो आई०ए०एस० बनकर नेताओं के पैर दबाते हैं। लेखक अगर नेता बन सकता तो कोई लेखक भूखा नहीं सोता और अगर वक्ता नेता बन सकता तो हर प्रवचन देने वाला संत मंत्री होता। मेरी समस्त योग्यताओं को उन्होंने घूरे पर डाल दिया था। मैंने उनके चरण पुनः पकड़े तथा अपने अवगुणों के लिए क्षमा माँगी।

वे प्रसन्न हुए और बोले कि तुममें नेता बनने का सबसे बड़ा गुण यह है कि तुम गधे को भी बाप बना सकते हो। इस एक गुण के कारण तुम राजनीति में बहुत उन्नति कर सकते हो पर यदि तुम्हें वास्तविक उन्नति करनी है तो मेरी बात ध्यान से सुनो। यह राजनीति का मूलमंत्र है, जिसने इसे अपनाया वह कभी असफल नहीं हुआ। अपने मुँह को मेरे कान के पास लाकर धीरे से पूछा, कभी तुमने कोई गलत काम किया है मसलन जेबकटी, चोरी, गबन इत्यादि। मैं घबरा गया और बोला – बिल्कुल नहीं, उच्च आदर्शमयी जीवन जिया है। वे उखड़ गये। बोले, घर में बैठ कर गुरु को भाषण देता है, सच–सच बता वरना तू मेरा चेला नहीं। मेरी आँखों में फिर आँसू आ गये। सच–सच बता दिया कि होली पर भाँग पीने के अतिरिक्त मैंने अपने तुच्छ जीवन में कोई ऐसा काम नहीं किया जिस पर गर्व कर सकूँ। उन्होंने ऐसा मुँह बनाया जैसे ठंडाई की जगह करेले का रस पी लिया हो।

उन्हें समझ आ गया था कि मैं राजनीति के क्षेत्र में नौसिखिया ही नहीं मूर्ख भी हूँ। अब वे मुझे ऐसे देखने लगे जैसे मैं कोई छोटा सा बच्चा हूँ। बोले, राजनीति में संगठन ही मुख्य शक्ति होता है। अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं। मिलने की इस प्रक्रिया को तुम्हें समझना चाहिए। कुछ कार्यों को करने से संबंध प्रगाढ़ होते हैं, कुछ कार्य संबंध बनाने में न सहायक होते हैं न अवरोधक और कुछ कार्य संबंधों को कमजोर करते हैं। संबंध ही संगठन का आधार हैं अतः हमें केवल ऐसे कार्य करने चाहिए जिनसे संबंध मजबूत हों। उदाहरण के लिए यदि दो व्यक्ति किसी विषय पर विद्वतापूर्ण चर्चा करते हैं तो असहमति की पूरी संभावना है जिससे बहस

होगी और संबंध कमजोर होंगें। अतः विद्वतापूर्ण चर्चा से बचो। यदि हम दोनों रात को हलवाई की दुकान पर दूध पीने जाएँ तो इससे संबंधों को कोई हानि नहीं हो सकती पर कोई विशेष लाभ की भी संभावना नहीं है। पर यदि हम दोनों रात को घूमते हुए एक महिला से बलात्कार कर उसकी हत्या कर दें तो हमारे बीच में ऐसा बंधन स्थापित हो जाएगा जिसे जीवन भर कोई नहीं तोड़ पाएगा। हमराज बनने पर हमारी समस्त असहमतियाँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी। आपसी राज के खुल जाने का डर संबंधों को सदा प्रगाढ़ता प्रदान करता रहेगा। इसलिए यदि राजनीति में स्थापित होना चाहते हो तो अधिकतम लोगों के हमराज या राजदाँ बन जाओ।

मेरे ज्ञानचक्षु खुल चुके थे। पर मन में एक शंका थी। मैंने डरते–डरते पूछा कि आपका मतलब है कि नेता बनने के लिए मुझे अपराधी बनना होगा। प्रश्न पूछते ही मुझे लग गया कि मैंने मूर्खता की है। उन्होंने मेरे निरीह भाव को पढ़ा और प्रतिप्रश्न दागा, अपराधी किसे कहते हैं। मैंने मासूमियत से जवाब दिया – जो अपराध करे वह अपराधी। वे मेरी मासूमियत पर हँस दिये और बोले – नहीं, अपराधी वह होता है जिसका अपराध न्यायालय में सिद्ध हो जाए। राजनीति में ऐसे मूर्खों के लिए कोई स्थान नहीं है जिनका अपराध सिद्ध हो जाए। राजनीति को अपराधियों से मुक्त रखना अत्यन्त आवश्यक है पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम संबंधों एवं संगठन को मजबूत करने वाले काम बंद कर दें।

मेरी समस्त शंकाएँ दूर हो चुकी थीं। मुझे राजनीति का गुरुमंत्र मिल चुका था। राजनीति का अर्थ भी समझ आ चुका था कि यह राज्य की नीति नहीं अपितु आपसी राज संभालने की नीति है। यह परम सत्य समझने के बाद मेरे जीवन को एक नयी दिशा मिली है। यदि आपका भी इस साल नेता बनने का इरादा है तो आइये हम साथ मिलकर कुछ खास काम करें और हमराज बनकर अपना भविष्य उज्जवल बनाएँ।

अनिल चावला

२६ फरवरी, २००२